



JBG
BUILDCON



APPROVED BY DTCP and RERA HARYANA • COMPLETION CERTIFICATE ISSUED BY DTCP JULY 2024

आज ही प्लाट बुक करें सेक्टर-3A बहादुरगढ़ में

BUILD YOUR **DREAM HOME** IN HERE WITH US

- Experience from living to budget
- Luxury is in the nature

- Absolute comfort
- Transform : Restore . Revigorate . Reinvent



GATED COMPLEX



WIDE RCC ROADS



CCTV SURVEILLANCE



PARK/GREEN AREA

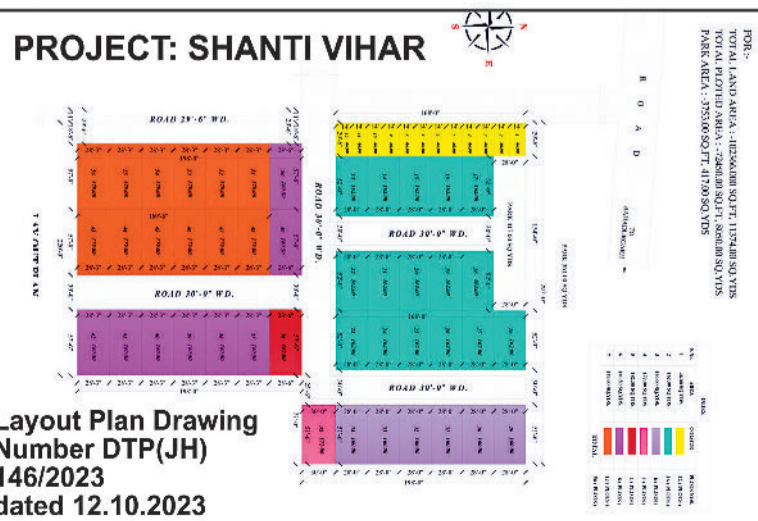
27 kms.
from ISBT
Delhi

16 kms.
from Peeragarhi
Chowk, New Delhi

03 kms.
from Metro
Station

01 km
from
Nature

02 MINUTES FROM
UER-II



ADD.: SECTOR 3A, CHHARA BERI ROAD,
SARAI AURANGABAD, BAHADURGARH, HARYANA-124507



+91 9610014026, 8295462780



इपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट	बिजनेस डेस्क
<p>▶ पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस इपीएस का हिस्सा रहना जरूरी</p> <p>▶ इपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी इपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी</p>	

अगर आप नौकरीपेशा हैं और इपीएस (इपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा इपीएस यानी एंजलॉयमेंट पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई इपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी मविध निधि संगठन (इपीएसओ) ने हाल ही में इपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार इपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह इपीएस (इपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है। पहले यह फाइलिंग सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी इपीएसओ ने अब इपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर इपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी इपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

इपीएसओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले इपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप अपने चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जायेंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद इपीएस के जरिये मिलने वाली मासिक पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी इपीएसओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक इपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि इपीएसओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें मविध की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि इपीएसओ ने इपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए निधनों में बदलाव किए हैं। इपीएसओ का कहना है कि इपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इस्वीलिया लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फैमिली पेंशन पाने के लिए इपीएस के पैसे नहीं हैं, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन इनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए इपीएस को जारी रखना मविध की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। इपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसे निकालते हैं, तो मविध में पेंशन नहीं मिलेगा। साथ ही फैमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानों की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

जानकारी	बिजनेस डेस्क
---------	--------------

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमानी के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ पोर्टेबिलिटी कैंसलेशन का मकौता भी देता है। यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर के जरिये आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पायेंगे। मिसाल के तौर पर अगर आप किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पायेंगे। जैसे ही आप यूपीआई पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रान्सफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फंड यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न में काम रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड



निवेश मंत्रा बिजनेस डेस्क

- ▶ यह दूसरी करैसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- ▶ पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- ▶ अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रूसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक है, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

ऑफर देखकर न ललाचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

अलर्ट	बिजनेस डेस्क
-------	--------------

कई बार हमें अचानक पैसे की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्च। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ विलक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्ज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्ज देना पड़ सकता है, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेंस वसूलेंगे।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई पूरना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनॉल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रुमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रान्सफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से लेकर सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रान्सफर या रिडेमप्शन की झंझट

गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर ने दुनिया के दूसरे देशों की करैसीज की कौमत्त तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कौमत्त गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छोड़े। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमांडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निकसन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे गोल्डरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमांडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सों का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के मरोसेमंद जरिये के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वैल्यू



की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा मंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे वह दूसरी करैसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रिजर्व यौल्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रिजर्व

यौल्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के आत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रिजर्व यौल्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा

गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजिशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रिजर्व यौल्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसांलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उभार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करैसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पड़ना शुरू हो जाता है। ऐसे में बॉन्ड्स बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटररेट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।



घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इसलिए साइड में चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्म में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, तहत आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के वरतन कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई टैक्स नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेस (लाभ) कमाने हैं। टैक्स सिर्फ बिना किसी छुपाई गई संपति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संग्राल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका उसकी बिल जरूर रखें। मविध में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर इटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है। इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लागू होगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेस टैक्स लागू इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और इटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर इटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बने फिजिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लागत है, जबकि गहनों के मेटिकन चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लागतवा जाता है।

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी



है कि देर से मुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्ज

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेंस अक्सर

ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्यूमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेंगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपकी मिलेगा, वह इन चार्जेंस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ पोर्टेबिलिटी कैंसलेशन का मकौता देगा

जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी

पैसे फौरन ट्रान्सफर हो जाएंगे,

नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैंसलेशन के लिए फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और पोर्टेबिलिटी का तरीका है।

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ परिस्थितियों में जरूरी है। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंधोरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है, हालांकि यह रिस्क बहुत

लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा

यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है, यूपीआई से पेमेंट करेंगे और बजट फिनान्स एग्रीमेंट सी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया

कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है

अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेमप्शन प्रोसेस मरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने प्लोटींग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार, अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वॉलंटरी होता है, कुछ बैंक इसे अनिवार्य बनाकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटो-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेंस या अन्य फॉर्माल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पंज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभायेंगे।

खबर संक्षेप

पराली जलाने के मामले में गुर्माना, एफआईआर झज्जर। जिले में पराली जलाने के मामलों पर प्रशासन सख्त रुख अपनाए हुए है। हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय बहादुरगढ़ द्वारा क्षेत्र के गांव पाटीदा में पराली जलाने के मामले में संबंधित किसान पर एफआईआर दर्ज करने की सिफारिश की गई है। दी गई शिकायत में कहा गया है कि गुरुग्राम के शेखपुरा माजरा निवासी एक किसान ने पाटीदा गांव में जमीन पट्टे पर लेकर खेती की थी। जब कृषि विभाग में कार्यरत फील्डमैन निक्की ने बीती 14 अक्टूबर को मौका मुआयन किया तो किसान द्वारा खेत में धान की पराली जलाई जा रही थी। इस पर फील्डमैन द्वारा उस पर पांच सौ रुपये का जुर्माना भी किया गया।

मुनादी करके अतिक्रमण न करने की हिदायत दी झज्जर। शहर के सौंदर्यकरण को लेकर नगर परिषद द्वारा बाजार व सड़क किनारे रेहड़ी या फड़ लगाने वाले दुकानदारों को अतिक्रमण न करने की हिदायत दी गई। नगर परिषद के सफाई दरोगा विकास उज्जैनवाल ने बताया कि उन्होंने सफाई दरोगा शिवम चोबिया व नरु कर्मी प्रदीप के साथ शहर के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करते हुए अतिक्रमण न करने की हिदायत संबंधी मुनादी की। दुकानदारों को बताया गया कि वे अतिक्रमण न करें। यदि दुकान के आगे रेहड़ी, फड़ या सामान रखकर अतिक्रमण किया जाता है तो न केवल उस अतिक्रमण को हटा दिया जाएगा।

कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि नशा मुक्ति शाखा बहादुरगढ़ से निरीक्षक सतीश उपस्थित रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

पुलिस की ओर से केएचएम मॉडल हैप्पी चाइल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बच्चों को नशा मुक्ति, सड़क सुरक्षा, साइबर क्राइम, महिला विरुद्ध अपराध और नए कानूनों के प्रति जागरूक किया गया। नशा मुक्ति शाखा बहादुरगढ़ से निरीक्षक सतीश कुमार मुख्यतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने नशे के दुष्परिणाम, सड़क सुरक्षा नियमों का पालन, साइबर अपराधों से बचाव तथा महिलाओं से जुड़े नए कानूनों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नशा समाज की जड़ों को कमजोर करता है और युवा पीढ़ी को गलत दिशा में ले जाता है। उन्होंने सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने और ट्रैफिक संकेतों का सम्मान करने को सलाह दी। सतीश कुमार ने विद्यार्थियों को सोशल मीडिया पर सजग रहने, निजी जानकारी साझा न करने तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना पुलिस को देने के लिए प्रेरित किया।

केएचएम मॉडल हैप्पी चाइल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल में कार्यक्रम का आयोजन विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणाम और सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने का दिया संदेश



बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को जागरूक करते इंसपेक्टर सतीश कुमार



झज्जर। ग्रामीणों को नशे के दुष्परिणाम के प्रति जागरूक करते पुलिस टीम तथा डॉक्यूमेंट्री फिल्म देखते विद्यार्थी।



फोटो : हरिभूमि

भंभेवा गांव में ग्रामीणों को बताए नशे के दुष्परिणाम, दूरी बनाने का आह्वान

झज्जर। शनिवार को क्षेत्र के गांव भंभेवा में पुलिस की एक टीम द्वारा ग्रामीणों को नशे के दुष्परिणाम के प्रति जागरूक किया गया। एएसआई सुनील कुमार और मुख्य सिपाही सपना ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि आपको यह पता होना चाहिए कि आपका बच्चा क्या कर रहा है। उन्होंने कहा कि नशा पुलिस को देने के लिए प्रेरित किया।

बच्चों से उनके पूरे दिन के क्रियाकलाप के बारे में जानकारी प्राप्त करें और अपने बच्चों के साथ एक दोस्ताना व्यवहार करें ताकि वह आपको सारी बातें बता दें और आप अपने बच्चों को सही रास्ते पर ला सकें। उन्होंने कहा कि नशा नशा का दूसरा नाम है जो पूरे परिवार को ही है। इसलिए अपने बच्चों पर विशेष ध्यान रखें और उन्हें अच्छे संस्कार दें।

छात्रों को एड्स के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

राजकीय मॉडल संस्कृति वमा विद्यालय ढाकला में शनिवार को एड्स जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य वेद प्रकाश ने बताया कि विद्यार्थियों को एड्स जैसी गंभीर बीमारी के प्रति सचेत करने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को डिजिटल बोर्ड पर एक टीचाएड्स नामक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई। फिल्म में माध्यम से विद्यार्थियों को एड्स के

ये रहे मौजूद

इस मौके पर शिक्षक विजय कुमार, योगिता, मन्मोज कुमार, आनंद, संदीप, मन्मता, ब्रह्मपाल, राकेश कुमार, यशवंती, मुमताज, राजेश कुमार, रमेश कुमार, सुनील कुमार, विक्रम, अमित दलाल, लख्मीचंद आदि उपस्थित रहे।

फीडबैक सेशन में छात्रों ने दिखाया उत्साह

डॉक्यूमेंट्री के बाद हुए फीडबैक सेशन में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने प्रश्नों के माध्यम से शंकाओं का समाधान किया। प्राचार्य ने कहा कि एड्स एक ऐसी बीमारी है जिससे केवल जागरूकता और सावधानी से ही बचाव संभव है। इस बीमारी का कोई स्थायी इलाज नहीं, जागरूकता ही इसका एकमात्र उपचार है।

गीत प्रतियोगिता में मॉडर्न स्कूल की छात्राएं प्रथम रही



हरिभूमि न्यूज. बहादुरगढ़

मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल की प्रतिभाशाली छात्राओं ने स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित जिला स्तरीय प्रतियोगिता में अंडर-11 गीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया। गीत प्रतियोगिता में मॉडर्न स्कूल की कक्षा तीसरी की इशिका व नय्या, चौथी की धमिरा, पायल व मानवी, कक्षा पांचवी की सीरत, तन्वी और तान्या शामिल थीं। इन्होंने अपनी

मधुर आवाज से सबका मन मोह लिया। प्रतियोगिता में जिले के विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया था। प्रतियोगिता को लेकर सीमा दलाल व प्रजा ने उनकी बेहतरीन तैयारी करवाई थी। प्रधानाचार्य संजीव कुमार व उप-प्रधानाचार्य जितेंद्र दहिया ने छात्राओं की इस उपलब्धि पर उन्हें प्रोत्साहित किया। स्कूल निदेशिका उर्मिला सांगवान और चेयरमैन डॉ. राकेश सांगवान ने भी छात्राओं की इस बड़ी उपलब्धि पर शुभकामनाएं दीं।

तीन दिवसीय भागवत कथा यज्ञ संपन्न

श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण की आराधना की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

मनोनीत पार्षद भीम सिंह प्रणामी के कार्यालय पर चल रही तीन दिवसीय 2423वें संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का शनिवार को विधिवत समापन हो गया। इस कथा का वाचन विश्वविख्यात भागवत भास्कर परम संत शिरोमणि श्रीश्री 108 श्री सदानंद महाराज ने किया। तीनों दिन चले इस दिव्य आयोजन में क्षेत्र भर से सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे और कथा श्रवण कर धर्म, भक्ति और जीवन के आदर्शों से ओतप्रोत प्रेरणा प्राप्त की। कथा के अंतिम दिन महाराज श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि श्रीमद् भागवत कथा मानव जीवन को श्रेष्ठ



बहादुरगढ़। भागवत का महत्व समझाते सदानंद महाराज।

फोटो : हरिभूमि

बनाने का मार्ग दिखाती है। जब मनुष्य भगवान के नाम और गुणों का श्रवण करता है तो उसका जीवन स्वतः ही पवित्र हो जाता है। उन्होंने धर्म, सत्य और करुणा के मार्ग पर चलने का संदेश देते हुए कहा कि भागवत कथा का उद्देश्य केवल सुनना नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारना है। समापन अवसर पर श्रद्धालुओं ने भजन-कीर्तन के साथ भगवान श्रीकृष्ण की आराधना की

और भक्ति भाव से माहौल भक्तिमय हो गया। कथा उपरांत भव्य भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर भूपेंद्र प्रणामी, राजपाल, दिनेश कुमार, दीपक प्रणामी, ओमवीर, सुनील कुमार समेत बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रही। कथा के सफल आयोजन के लिए आयोजक भीम सिंह प्रणामी और उनकी टीम का आभार जाता है।

टैक्सी स्टैंड के पास नाले की सफाई न होने से चालकों व दुकानदारों को परेशानी

खुले नाले से उठती दुर्गंध से पूरा दिन रहता बदबूदार माहौल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

अंबेडकर चौक के नजदीक स्थित टैक्सी स्टैंड पर नाले की साफ-सफाई न होने के कारण दुकानदारों व टैक्सी चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दुकानदार देवा, प्रह्लाद, होशियार सिंह व टैक्सी चालक ईश्वर, इंद्र, ऋषि, सूरजमल, सतीश कुमार, आशु आदि का कहना है कि बरसाती सीजन की शुरुआत में उनकी दुकान के आगे बने नाले से ढक्कन टूटकर कुछ हिस्से में साफ-सफाई की गई। इसके बाद कर्मचारी ढक्कन लगाने



झज्जर। नाले के पास खड़े दुकानदार व टैक्सी चालक।

थे। खुले नाले वाले हिस्से में एक फूल विक्रेता तथा एक पेंटर की दुकान है जबकि एक तख्त विछाया है जहां टैक्सी चालक विश्राम करते हैं। खुले नाले से उठती दुर्गंध के कारण वे पूरा दिन बदबूदार माहौल में बैठने को मजबूर हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से गुहार लगाई है कि नाले की सफाई कराकर इसे ढका जाए ताकि उन्हें समस्या से छुटकारा मिल सके।

चरक पार्क में फिर भरा पानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

चरक औषधीय पार्क में बीती रात को फिर से जलभराव की समस्या गहरा गई। निकासी के लिए लगाए गए पाइप खुलने के चलते यह स म र या उत्पन्न हुई। हा लां कि पानी निकालने का काम अभी जारी है। दरअसल, सेक्टर-13 की ग्रीन बेल्ट में बनाए गए चरक पार्क में बरसात तथा निकासी नाला टूटा होने के कारण पानी भर गया था। जलभराव के कारण इस पार्क के हजारों पौधे नष्ट हो गए।



बहादुरगढ़। सेक्टर-13 में जोड़ से खुला हुआ पाइप।

फोटो : हरिभूमि

मीडिया, इंटरनेट मीडिया पर किरकिरी होने के बाद इस तफ ध्यान दिया गया। लागम महीने भर बाद अभी हाल ही में इस पार्क से पानी निकालने का काम शुरू हुआ। बीती रात को रहस्यमयी परिस्थितियों में पाइप निकल गया। जिससे पुनः पार्क में पानी भर गया है। चूँकि पार्क में पहले भी कई नुकसानदेह घटना हो चुकी है तो कुछ आक्रोषित लोगों को शक है कि

जानबूझ कर पाइप खोला गया। वहीं, दबाव के चलते खुद भी पाइप निकलने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। बहरहाल, वजह जो भी हो, हरियाली को निरंतर नुकसान हो रहा है। पर्यावरण प्रेमियों का कहना है कि बिना किसी आधार के किसी को कुछ नहीं कहा जा सकता। बेहतर यह है कि पानी निकालकर पार्क के संवारे पर जोर दिया जाए।



एचडी साल्हावास की छात्रा अंजलि बनी सब इंसपेक्टर

झज्जर। एचडी साल्हावास की छात्रा अंजलि जाखड़ ने दिल्ली पुलिस में सब इंसपेक्टर बनकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। एचडी गुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि उनके संस्थान की पूर्व छात्रा अंजलि जाखड़ ने दिल्ली पुलिस में ऑल इंडिया स्तर पर 121वां रैंक और लड़कियों के वर्ग में 18वां रैंक हासिल किया। अब अंजलि का चयन एनसीसी में जीसीआई पद पर हुआ है। उन्होंने बताया कि अंजलि की बड़ी बहन दिल्ली पुलिस में तथा इसी परिवार की प्रीति जाखड़ इनकम टैक्स विभाग में कार्यरत है। अंजलि जाखड़ ने अपनी सफलता का श्रेय एचडी प्रबंधन समिति एवं अपने अभिभावकों के सहयोग को दिया है। एचडी गुप सचिव विशाल नेहरा, हेमंत गुलिया व प्राचार्य सतबीर सिंह ने स्टॉफ सदस्यों की बधाई देकर विद्यालय प्रबंधन द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

छात्रों से की डिफेंस सर्विस में करियर पर चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

छात्रा के चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में कार्यकारी प्राचार्य डॉ. अनिता दलाल के कुशल दिशानिर्देशन तथा प्लेसमेंट सेल प्रभारी डॉ. अश्वनी कुमार के नेतृत्व में एक विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें डिफेंस सर्विस में कैरियर विकल्पों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में खरखौदा के शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय अंसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. विनोद मलिक



ने छात्रों को जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को भारतीय सेना, नौसेना और वायु सेना में शामिल होने के लिए एनडीए, सीडीएस, एसएससी, यूपीएससी और एफसीएटी जैसे विभिन्न माध्यमों की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. मलिक ने कहा कि रक्षा सेवाएं न केवल देश की सेवा का माध्यम हैं, बल्कि एक सम्मानजनक

और स्थायी करियर विकल्प भी हैं। इस क्षेत्र में सफलता के लिए अनुशासन, दृढ़ संकल्प, नेतृत्व क्षमता और देशभक्ति जैसे गुणों का होना आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन एवं समन्वयन डॉ. अश्वनी कुमार ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी में जोश, ऊर्जा और देशसेवा की भावना

प्रबल होती है और इसे सही दिशा में प्रयोग करना ही सच्ची देशभक्ति है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे, जिनका मुख्य वक्ता ने विस्तारपूर्वक उत्तर दिया। इस अवसर पर डॉ. संजय देसवान, डॉ. मनोज कुमार, देवेन्द्र, डॉ. जयंत, गोविंद व विजय आदि उपस्थित रहे।

डीसी ने की राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने की समीक्षा

झज्जर। मुख्यमंत्री नरेश सिंह सेनी ने शुक्रवार को वीसी के माध्यम से जिला प्रशासन के साथ आगामी राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता से जुड़े कार्यक्रमों और मंडियों में चल रही भाव व बाजार खरीद प्रक्रिया की समीक्षा की। मुख्यमंत्री के दिशा-निर्देशों के उपरान्त डीसी स्वच्छता रविंद्र पाटिल ने जिला सचिवालय में अधिकारियों के साथ बैठक कर आवश्यक तैयारियों की समीक्षा की और कार्यक्रमों के सफल आयोजन के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि देश के प्रथम गृह मंत्री लाल कृष्ण शस्त्रकर्तार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर को जिले में जिला स्तर पर रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जाएगा। इसके साथ ही छह दिनों तक राष्ट्रीय एकता और अखंडता से प्रेरित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस उपलब्धि में सात नवंबर से लेकर अगले वर्ष 7 नवंबर 2026 तक विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की जाएगी।

एटी सीएम गन, वाटर सप्लिकलिंग से वायु गुणवत्ता सुधारने का प्रयास

झज्जर। एनसीआर क्षेत्र में वायु गुणवत्ता में गिरावट को देखते हुए गैप स्ट्रेटजि-टू के तहत प्रतिबंध लगाए गए हैं। डीसी स्वच्छता रविंद्र पाटिल ने कहा कि जो भी औद्योगिक इकाई, संस्था, विभाग या व्यक्ति प्रदूषण नियंत्रण मानकों का उल्लंघन करेगा, उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने कहा कि बहादुरगढ़ क्षेत्र में प्रदूषण नियंत्रण के कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए एएसडीएम बहादुरगढ़ नरेश कुमार को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है, जो सभी विभागों के समन्वय से इन उपायों की सख्ती से निगरानी करेंगे। इसके अलावा नगर परिषद बहादुरगढ़ एवं झज्जर में एटी सीएम गन और वाटर सप्लिकलिंग के माध्यम से सड़कों और पेड़ों पर धूल नियंत्रण अभियान चलाया जा रहा है। डीएसडी इंजीनियर सुशील मलिक ने बताया कि नगर परिषद की टीम प्रतिदिन सड़कों की मैकेनिकल सफाई, वाटर सप्लिकलिंग और कचरा उठाने का कार्य कर रही है।

कई स्थानों पर हाथ पर हाथ धरे बैठे नजर आए कर्मचारी

वार्ड अनुसार लगाए शिविरों में नाममात्र लोगों ने उठाया लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

सरकार द्वारा शुरू की गई लाडो लक्ष्मी योजना के अंतर्गत लगाए सहायता शिविरों में पहले दिन नाममात्र लोगों ने पहुंचकर आवेदन किया और लाभ उठाया। शहर में नौ अलग-अलग स्थानों पर लगाए गए सहायता शिविरों में कई स्थान ऐसे भी रहे जहां एक भी व्यक्ति ने पहुंच कर आवेदन नहीं किया। ऐसे में संबंधित ड्यूटी कर्मचारी हाथ पर हाथ धरे अपने स्थान पर बैठे नजर आए। एक-दो स्थानों पर आवेदनकर्ता पहुंचे भी तो उनमें दस्तावेजों की कमी के कारण आवेदन नहीं हो पाए। शहर में कुल नौ स्थानों पर लगाए



झज्जर। रुमाष नगर के शिव मंदिर में आवेदन करते हुए लाभार्थी तथा सैनी धर्मशाला में ड्यूटी पर मौजूद कर्मचारी।



फोटो : हरिभूमि

एक भी आवेदन नहीं हो पाया। किसी केंद्र ब्रिगेड ऑफिस, महाशाला अग्रसेन, शहीद अमन कुमार राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीताराम गेट स्थित सैनी धर्मशाला व दिल्ली गेट स्थित सैनी धर्मशाला में बनाए गए सहायता शिविरों में

इन स्थानों पर लगे सहायता शिविर

नगर परिषद द्वारा 12 व 12 वार्ड के लिए जटिया धर्मशाला में सीपीएलओ मोहित, 3.10 व 11 वार्ड के लिए सीताराम गेट की सैनी धर्मशाला में डीईओ पंकज, 4 और 5 वार्ड के लिए दिल्ली गेट स्थित सैनी धर्मशाला में डीईओ सुनील कुमार, 7 व 8 वार्ड के लिए फायर हिलोड कार्यालय में क्लर्क विनीत, 6 व 9 वार्ड के लिए महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में डीईओ मन्मोज, 13 और 14 वार्ड के लिए शहीद रमेश कुमार राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में डीईओ प्रवीण, 15 व 16 वार्ड के लिए छवती स्थित श्री शिव हनुमान मंदिर में क्लर्क तेजवीर, 17 वार्ड के लिए पटवार भवन में डीईओ अजीत तथा 18 और 19 वार्ड के लिए रुमाष नगर स्थित शिव मंदिर में लगाए गए सहायता शिविर में क्लर्क रविंद्र की ड्यूटी लगाई थी।

साइट बिजी होने के कारण लोगों को आई परेशानी

रुमाष नगर में पहुंचे लाभार्थियों को साइट बिजी होने के कारण परेशानी का सामना करना पड़ा। सुबह दस बजे से दोपहर करीब डेढ़ बजे तक बाधुशिकल चार आवेदन हो पाए।

के श्री शिव हनुमान मंदिर में छह लाभार्थियों लगाया जा सकता है कि कितने आवेदन हो ने आवेदन किया, ऐसे में सहज अंदाजा पाए होंगे।

खबर संक्षेप



बहादुरगढ़। जसौरखेड़ी में छात्राओं को जानकारी देते डॉ. विकास।

जसौरखेड़ी कॉलेज में व्याख्यान का आयोजन
बहादुरगढ़। शनिवार को जसौरखेड़ी के राजकीय महिला महाविद्यालय में प्लेसमेंट सैल द्वारा एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. विकास ने अपने व्याख्यान में छात्राओं को कैरियर चुनने के विविध आयामों से परिचित करवाया। इसके साथ ही उनकी काबिलियत एवं रुचि के आधार पर उन्हें अपना कैरियर चुनने की सलाह दी। प्लेसमेंट सैल प्रभारी डा. प्रियंका अग्रवाल ने उनका स्वागत किया। प्राचार्य डा. संदीप ने उनका धन्यवाद किया। इस अवसर पर डा. सुनील कुमार, अनिल कुमार व डा. सुनील आदि उपस्थित रहे।

आज चंद्रमान मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट की बैठक
बहादुरगढ़। चंद्रमान मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आगामी 3 दिसंबर को सेना के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस संदर्भ में ट्रस्ट की ओर से शहर के सामाजिक संगठनों और गणमान्य व्यक्तियों की एक विचार-विमर्श बैठक रविवार 26 अक्टूबर को बुलाई गई है। शहर के पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में रविवार सुबह 10 बजे होने वाली बैठक में रक्तदान शिविर की तैयारियों, व्यवस्था एवं प्रचार-प्रसार पर चर्चा की जाएगी।

रमन प्रधान तो रमेश बने जिला सचिव
बहादुरगढ़। हुडा जनस्वास्थ्य कर्मचारी यूनियन की झज्जर-बहादुरगढ़ जिला कमेटी के द्विवार्षिक चुनाव शनिवार को संपन्न हुए। प्रदेश अध्यक्ष रामकिशन नागर की देखरेख में यह प्रक्रिया हुई। रमन कुमार जून को जिला प्रधान बनाया गया है। वरिष्ठ उपप्रधान मदन मोहन नागर तथा जिला सचिव रमेश कुमार बनाए गए हैं। सतीश शर्मा, जितन कुमार, सनी कुमार आदि उपप्रधान चुने गए हैं। जयप्रकाश को जिला कैशियर की जिम्मेदारी मिली है। विजय कुमार सह कैशियर, विकास सह सचिव होंगे। जबकि हवा सिंह को ऑडिटर बनाया गया है। संगठन सचिव अजीत सिंह, प्रचार सचिव रणजीत सिंह, सह कैशियर सचिव मनीष कुमार, सलाहकार सुरेंद्र सिंह, सह सचिव राजू बनाए गए हैं।

कार की टक्कर से बाइक सवार घायल
बहादुरगढ़। बाईपास पर कार और बाइक की टक्कर हो गई। हादसे में बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे दिल्ली के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल की शिकायत पर महिला कार चालक के खिलाफ सदर थाने में केस दर्ज किया गया है। घायल की पहचान लक्ष्मी निवासी बदरपुर दिल्ली के रूप में हुई है। लक्ष्मी कसार स्थित अपने मामा के घर से वापस लौट रहा था। जब बाईपास पर झज्जर रोड फ्लाईओवर के निकट पहुंचा तो एक कार ने साइड मार दी। टक्कर लगते ही वह दूर जा गया। उसके हाथ, पांव की हड्डियां टूट गईं। इसके बाद उसे अस्पताल ले जाया गया। सदर थाना पुलिस दिल्ली स्थित अस्पताल में उसके बयान लेने गई।

आज शहर में निकाला जाएगा नगर कीर्तन
झज्जर। पंचायती गुरुद्वारा एवं बाबा नानक निष्काम सेवा समिति द्वारा रविवार को नगर कीर्तन का आयोजन किया जाएगा। समिति प्रधान ईश्वर शर्मा ने बताया कि साहिब श्रीगुरुनानक देव जी के प्रकाशोत्सव के उपलक्ष्य में रविवार की प्रातः 11 बजे श्रीगुरुसाहिब व पंज प्यारों की अगुवाई में पंचायती गुरुद्वारा से नगर कीर्तन आरंभ किया जाएगा। यह नगर कीर्तन पंचायती गुरुद्वारे से शुरू होकर पूर्व विधायक बनारसी दास मार्ग, बेरी गेट, अंबेडकर चौक, बीकानेर चौक, बाबा बालक नाथ मंदिर, चौधरी सुल्तान सिंह मार्ग, गुरुद्वारा चौक छावनी, सिलानी गेट, हरिपुरा मोहल्ला, मां वैष्णो चौक, डायमंड चौक व नेता जी सुभाष चौक से होते हुए वापिस गुरुद्वारे पहुंच कर संपन्न होगा।

खीर खाने के बाद 36 घंटे का रखा जाता है कठिन व्रत

नहाय-खाय के साथ शुरू हुआ छठ महापर्व

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

पूर्वाह्न में छठ के नाम से विख्यात पर्व शनिवार को कार्तिक मास की चतुर्थी तिथि से शुरू हो गया। आज नहाय-खाय के माध्यम से व्रती महिलाओं और पुरुषों ने खुद को शुद्ध किया अर्थात् अपने को सूर्य उपासना के इस कठिन व्रत रखने के योग्य बनाया। छठ व्रतियों ने स्नान करके नए कपड़े पहने और शाकहारी भोजन किया। अब रविवार को खरना पूजा होगी। बता दें कि कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को सूर्य देव की पूजा का विशेष महत्त्व है। समृद्धि, ऐश्वर्य समेत पति-पुत्र आदि की प्राप्ति के लिए महिलाएं और पुरुष यह व्रत रखते हैं। शनिवार को नहाय-खाय के दिन पूरे घर की साफ-सफाई की गई। स्नान करने के बाद व्रत का संकल्प लिया गया। परिवार एवं इष्ट-मित्रों के साथ शुद्ध भोजन किया और व्रत के सकुशल पूरा होने के लिए सूर्य



देव सहित इष्ट देवताओं की आराधना की। बिहार निवासी मुकेश सिंह ने बताया कि छठ पूजा का दूसरा यानी सबसे महत्वपूर्ण दिन खरना का होता है।

लोगों ने जमकर खरीदारी की

इस दिन से व्रत का प्रारंभ होता है और रात में पूरी पवित्रता के साथ बनी गुड़ की खीर का सेवन किया जाता है। खीर खाने के बाद 36 घंटे का कठिन व्रत रखा जाता है। खरना के दिन छठ पूजा का प्रसाद भी तैयार किया जाता है। छठ महर्षि को मालपुआ, सूजी का हलवा, चावल के लड्डू, खजूर आदि का भोग लगाना शुभ माना जाता है। छठ महर्षि के तीसरे दिन सोमवार शाम को डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। इस दिन छठ व्रती पूरे दिन निजला व्रत रखेंगे और शाम को डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य देंगे। चार दिवसीय छठ महापर्व का समापन मंगलवार को उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने के साथ होगा। घाट पर बैठकर व्रती विधिवत तरीके से पूजा करेंगे। बाद में प्रसाद ग्रहण करके व्रत का पारण किया जाता है। छठ के कारण दुकानें सजी रही और लोगों ने खूब खरीदारी की।

महक ने पाया पहला स्थान



झज्जर। राजकीय स्नातकोत्तर मेहरू महाविद्यालय के प्रबंधन विभाग में सोशल मीडिया के अत्याधिक उपयोग विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन विभागाध्यक्ष सौरभ जैन के निदेशन में प्रदीप कुमार, सविता पूजन और डॉक्टर रवीन काटियायन ने किया। प्राचार्य डॉक्टर देवकी सिंह ने विजेता विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए और उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया का अधिक उपयोग हानिकारक है लेकिन सीमा में रहकर इस्तेमाल करने से इसका फायदा भी उठाया जा सकता है। प्रतियोगिता में बीबीए प्रथम वर्ष की महक ने पहला, बीबीए प्रथम वर्ष की वंशिका ने दूसरा और बीबीए प्रथम वर्ष के अतुल तथा वंशदीप ने संयुक्त रूप से तीसरा स्थान प्राप्त किया। हिंदी प्राध्यापक शिव कंवर और अंजेली प्रवता मंजौर ने प्रतियोगिता का निर्णय किया।

करेज हाऊस ने जीता इंटर हाउस क्रिकेट मुकाबला



झज्जर। संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास में सैनियर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए शनिवार को इंटर हाऊस क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया। टूर्नामेंट में जीती से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। क्रिकेट मुकाबले में करेज हाऊस के खिलाड़ियों ने शाहदर प्रदर्शन करते हुए वैश्वानरिण ट्राफी जीती जबकि ट्रस्ट हाऊस के खिलाड़ी द्वितीय व रिपब्लिक हाऊस के खिलाड़ियों ने तृतीय स्थान हासिल किया। संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने विजेता खिलाड़ियों को बधाई देते हुए उनके खेल कौशल, अनुशासन और टीम भावना की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह टूर्नामेंट दिखाता है कि उनके संस्थान के विद्यार्थी न केवल अकादमिक रूप से बल्कि खेल के मैदान में भी संघर्ष करने व जीतने का जुनून रखते हैं।

करीब दो से ढाई माह पूर्व वारदात को दिया था अंजाम

जमीनी विवाद में की पिता और भाई की हत्या, आरोपी गिरफ्तार

सबूत मिटाने के लिए शव को जलाने का भी किया प्रयास

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

क्षेत्र के गांव औरंगपुर के खेतों में जमीनी विवाद को लेकर अपने पिता और भाई की हत्या कर शव को जलाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि करीब दो से ढाई माह पूर्व हत्या की वारदात को अंजाम देने के बाद सबूत को मिटाने के लिए शव को जलाने का भी प्रयास किया गया। पुलिस को पता चलने पर पुलिस टीम द्वारा मौका मुआयना करते हुए साक्ष्य जुटाए और आरोपी पुत्र को गिरफ्तार किया गया। पुलिस विभिन्न पहलुओं को देखते हुए मामले की जांच कर रही है। मृतकों की पहचान करीब खजान सिंह और उसके छोटे बेटे संजय के तौर पर हुई है।



झज्जर। जिस मकान में खजान सिंह अपने परिजनों सहित रहता था।

फोटो : हरिभूमि

आखिर क्या है मामला

जानकारी अनुसार खजान सिंह मूल रूप से गांव किलोई का रहने वाला था और फिलवत व औरंगपुर गांव की सीमा में अपने परिवार सहित खेतों में मकान बनाकर रहता था। उसका बेटा अनिल, अशोक व संजय भी परिवार के साथ रहा करते थे। इस बीच जमीनी विवाद के कारण अशोक ने अपने पिता और भाई संजय को मौत के घाट उतार दिया। बताया जा रहा है कि खेत में मकान बनाए जाने के बाद से खजान सिंह का गांव में कम ही आता जाता था। बीते दिनों डाक विभाग का कर्मचारी खजान सिंह को बुलावा पेशन देने गया था। उसी दौरान ही पता चला कि खजान सिंह की मौत हो

चुकी है। उसके बाद ही गाम्भीणों को पता चला और पुलिस को भी इसकी सूचना मिली। जिसके बाद पुलिस विभाग हरकत में आया और जांच करने के बाद पता चला कि उसके बेटे ही वारदात को अंजाम दिया है। बताया यह भी जा रहा है कि खजान सिंह तीनों बेटे अनिल, अशोक और संजय की शादी एक ही परिवार की तीन सगी बहनों से हुई है। लेकिन घटना के बाद से संजय की पत्नी ने इस मामले में क्यों चुपची साधे रखी यह भी जांच का विषय है। जिसके कारण पुलिस विभिन्न पहलुओं को देखते हुए मामले की जांच कर रही है।

आरोपी से पुलिस कर रही पूछताछ



एसीपी सुरेंद्र सिंह ने बताया कि जमीनी विवाद में अपने पिता खजान और भाई संजय की हत्या करके उनके शरीर को जलाकर खतु मिटाने जैसे अमानवीय घटना को अंजाम देने वाले आरोपी पुत्र अशोक को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि सामाजिक दृष्टिकोण को देखते हुए दुलौगा चौकी की पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी जिस पर कार्रवाई करते हुए थाना सदर में मामला दर्ज किया गया है। इसमें मुख्य आरोपी अशोक को गिरफ्तार करके उससे पूछताछ की जा रही है। जिसे स्थानीय अदालत में पेश करके पुलिस रिमांड पर लिया जाएगा तब तक पता लगाया जा सके कि इस मामले में और कौन-कौन आरोपी शामिल हैं।

मांडोटी में ब्रह्माकुमारियों ने मनाई सिल्वर जुबली



बहादुरगढ़। मांडोटी में हुए कार्यक्रम में उपस्थित ब्रह्माकुमारियां।

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मांडोटी सेवा केंद्र के 25 वर्ष पूर्ण होने पर भव्य सिल्वर जुबली समारोह का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निर्देशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आशा दीदी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। बीके आशा दीदी ने कहा कि त्यागी व तपस्वी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बहनों की अथक साधना और निस्वार्थ सेवा के फलस्वरूप आज गांव-गांव में ईश्वरीय जात जागृत हो रही है। सरपंच नसीब कौर, नीलेश

दलाल, नय चेरपरसन सरोज राठी, दलाल 84 खाप के प्रधान भूप सिंह दलाल, जजपा जिलाध्यक्ष संजय दलाल, बल्लू प्रधान, टैनी प्रधान व महावीर दलाल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। बीके अंजलि दीदी ने कहा कि सच्ची सेवा आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है। बीके विनोता दीदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। बीके रेणु दीदी व अमृता दीदी की 25 वर्षों की सेवाओं की भी विशेष रूप से सराहना की गई। कार्यक्रम में बच्चों ने बहुत सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। बीके डॉर सुंदर गौयल ने सभी का धन्यवाद किया।

चौगान माता के भंडारे में लोगों ने किया प्रसाद ग्रहण

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

दिल्ली गेट स्थित चौगान माता मंदिर दो दिवसीय वार्षिकोत्सव के अंतर्गत जागरण व भंडारे का आयोजन किया गया। आयोजक समिति सदस्य मुकेश धनखड़, प्रदीप, विककी जाखड़, चिंटू, मनीष, मोहित, मंदीप, नीरू दूदन, विनोद धनखड़ आदि ने बताया कि दिल्ली गेट निवासियों द्वारा प्रतिवर्ष कार्तिक माह में किया जाने वाला यह उनका आठवां आयोजन रहा। मंदिर के नजदीक स्थित जाट धर्मशाला में आयोजित इस वार्षिकोत्सव में शुक्रवार की शाम विशाल जागरण

तथा शनिवार को भंडारे का आयोजन किया गया। सुबह हवन के बाद चौगान माता की पूजा-अर्चना के साथ शुरू हुए भंडारे में सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इससे पहले शुक्रवार की रात हुए जागरण में गायक कलाकार दामिनी पंचाल, पूरम रोहतक, रवि बागड़ी व मनोज वर्मा द्वारा भजनों के माध्यम से चौगान माता की महिमा का गुणगान किया गया। इस दौरान गगन महाकाल युप सोनीपत द्वारा धार्मिक झांकियां भी निकाली गईं जिनमें श्री राधा-कृष्ण, भगवान भोले नाथ व महालली हनुमान की झांकी आकर्षण का केंद्र रही।



झज्जर। चौगान माता के भंडारे में प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु।

बाल भवन प्रतियोगिताओं में संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थी अव्वल



झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थी।

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

बाल भवन में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक एवं रचनात्मक प्रतियोगिताओं में संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अनेक पुरस्कार हासिल किए। प्राचार्या श्वेता कौशिक ने बताया कि 14 अक्टूबर को आयोजित स्पर्धाओं में उनके संस्थान की छात्रा रिया ने पोस्टर मैकिंग, गुजान ने एकल नृत्य व गोपिका ने शास्त्रीय नृत्य में तृतीय स्थान हासिल किया। 15 अक्टूबर को हुई स्केचिंग प्रतियोगिता में रजत, एकल नृत्य में सोनल व शास्त्रीय नृत्य में निखारिका तीसरे स्थान पर रही वहीं थाली सजावट में खुशी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

फैंसी ड्रेस में रिया प्रथम

16 अक्टूबर को रोनीली प्रतियोगिता में पूजा व निर्मला द्वितीय जबकि समूह नृत्य में विद्यालय की टीम तृतीय स्थान पर रही। 17 अक्टूबर को एकल नृत्य में वंशिका, समूह नृत्य में सानवी की टीम तथा मनोरंजन खेलों के बालक वर्ग में देवाशि व बालिका वर्ग में स्वाति ने तीसरा स्थान पुरस्कार जीता। फैंसी ड्रेस में रिया को पहला, वले मॉडलिंग में हर्ष व कार्ड मैकिंग में त्रिशा ने दूसरा तथा एककी नाटक में कुनाल तीसरे स्थान पर रहा। ओवरऑल प्रतियोगिता में विद्यालय को तीसरा स्थान मिला। संस्कारम समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल यादव ने कहा कि बाल भवन जैसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

एक्सईएन के आठवासन पर कर्मचारियों ने किया धरना समाप्त

बहादुरगढ़। समस्याओं के समाधान के सिलसिले में एक्सईएन द्वारा मिले आश्वासन पर हुडा जनस्वास्थ्य कर्मचारियों ने संतोष जताया है। कर्मचारियों की ओर से धरना समाप्त कर दिया गया है। शनिवार को हुई बैठक में ये एलान किया गया। हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच से संबद्ध हुडा जन स्वास्थ्य कर्मचारी यूनियन की वरिष्ठ रजिस्ट्रेशन पर बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता राज्य कोषाध्यक्ष महावीर सिंह नागर व राज्य कर्मचारी सदस्य सतीश शर्मा ने की। संचालन टीनु मदान और जिला सचिव रमेश कुमार ने किया। यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष रामकिशन नागर ने बताया कि 24 अक्टूबर को शाम को कार्यकारि अभियंता अमित राठी ने धरनात यूनियन शिफ्टमंडल को अपने कार्यालय में बुलाया। बैठक में मांगों पर चर्चा हुई। उन्होंने कौन्ट्रेक्ट बेस्ड कच कर्मियों के नाम कोशाल रोसागर निगम के पोर्टल पर डालने का आश्वासन दिया। साथ ही टेकेदारों को पिछले बकाया, ईपीएफ, ईएएसआई जमा कराने का आदेश दिए। कई और मांगों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन दिया। नागर ने कार्यकारी अभियंता अमित राठी के कदम की सराहना की।

80 लाख में लगभग 25 रेन वॉटर हार्वैस्टिंग

बहादुरगढ़। शहर में जलमयव की समस्या से जूझ रहे क्षेत्रों को राहत देने के लिए नगर परिषद ने रेन वॉटर हार्वैस्टिंग सिस्टम लगाने शुरू कर दिए हैं। शनिवार को इसकी शुरुआत झील मोहल्ला से हो गई। वाइड चेरमेन पालेयम शर्मा और चेरपरसन प्रतिनिधि रमेश राठी, आजपा मंडल अध्यक्ष संजय जैनी ने स्थानीय लोगों के साथ नरियल फोडकर इस योजना का शुभारंभ किया। नगर परिषद की चेरपरसन सरोज राठी ने बताया कि प्रथम चरण में पूरे बहादुरगढ़ शहर में 25 रेन वॉटर हार्वैस्टिंग सिस्टम लगाए जाएंगे। इन पर करीब 80 लाख रुपए की राशि खर्च की जाएगी। शहर के सेक्टर-6, मांडोटी बाजार, झील मोहल्ला सहित अन्य जलमयव प्रभावित क्षेत्रों में ये लगाया जाएगा। उनकी अध्यक्षता में बीते दिनों हुई बैठक में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया था। भूमिगत जलस्तर को भी बढ़ावा मिलेगा। इस अवसर पर पवन रोहिल्ला, आशु सैनी, मनमोहित गुप्ता, कृष्ण प्रधान, उमेश, केवल राम, किशय वाल्मीकि, विनोद, धर्मपाल, बलजित, सविता पवार, सुशील प्रकाश और महेशी प्रधान उपस्थित रहे।



बहादुरगढ़। झील मोहल्ला में रेन वॉटर हार्वैस्टिंग सिस्टम का शुभारंभ करते पदाधिकारी।

विजेता को 51 लाख व उपविजेता को 41 हजार का इनाम दिया जाएगा

फुटबॉल प्रतियोगिता में आज होंगे निर्णायक मुकाबले

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

मेहंदीपुर डाबोदा में आयोजित पंचायती फुटबॉल प्रतियोगिता में शनिवार को कई रोमांचक मुकाबले खेले गए। अब रविवार को सेमीफाइनल व फाइनल मुकाबले खेले जाएंगे। विजेता टीम को 51 हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। गत 23 अक्टूबर को यह पंचायती फुटबॉल प्रतियोगिता डाबोदा के सरकारी स्कूल के मैदान में शुरू हुई थी। हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान की 35 टीमों ने भाग लिया। शनिवार को भी कई रोमांचक मुकाबले हुए। मैडी क्लब डाबोदा ने गंगावा हिसार की टीम को पेनल्टी शूट में 4-3 के



बहादुरगढ़। गोल के लिए फुटबॉल की ओर भागते खिलाड़ी।

अंतर से हरा दिया। लोवा खर्द ने 1-0 के अंतर से करौंथा पर जीत दर्ज की। वहीं नरखेड़ी ने खेड़ी तलवाना को 2-0 के अंतर से जीत दर्ज की। देर शाम तक मुकाबले जारी थे। बड़ी तादाद में मौजूद दर्शकों ने मुकाबलों का लुफ उठाया। कोच प्रदीप दलाल ने बताया कि दादा भैया फुटबॉल क्लब व समस्त ग्रामवासियों की ओर से यह प्रतियोगिता कराई जा रही है। विजेता को 51 लाख और उपविजेता को 41 हजार रुपये का इनाम दिया जाएगा।

खेल शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास

झज्जर। स्थानीय पुलिस लाइन परिसर स्थित डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में पुलिस स्मृति दिवस से लेकर राष्ट्रीय एकता दिवस तक के कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत शनिवार को विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। क्रिकेट, फुटबॉल, बॉडी आदि प्रतियोगिताएं कराई गईं। प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल भावना, अनुशासन एवं टीम भावना को विकसित करना रहा। प्राचार्य पंकज वालिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल जीवन में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। विजेता विद्यार्थियों को आगामी कार्यक्रम में सम्मनित किया जाएगा।



उड़ने के लिए तैयार पलाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए पलाइंग कारों की उड़ती हुई दिखने लगेगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देस में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नाए हवाई सफर पर एक नजर।



टीकेब कंपनी चीन की ई20 एयरटेक्स

किरसे पूरी तरह से छा गए और हर किसी को पता लग गया कि उड़ने वाली कारों अब विज्ञान कथा भर नहीं हैं, वास्तविक जिंदगी का हिस्सा बनने की कगार पर हैं। निकट भविष्य में इनका उपयोग शहरी परिवहन, आपातकालीन सेवाओं और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में बहुत कामन हो जाएगा।

सुरक्षा है बड़ा मुद्दा: जिस तरह इन दिनों चीन में हुई हवाई दुर्घटना के कारण दो एयर टैक्सियों के आपस में भिड़ जाने पर खूब चर्चा हो रही है, उससे उड़ने वाली कारों यानी ईवीटीओएल की तकनीकी सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। माना जाता है कि ऐसी

काल्पनिक कारों का यह पहला मिड एयर कॉलिशन है। लेकिन यह अकेला कारण भी नहीं है, जिसकी वजह से इन उड़न कारों की बातें हो रही हैं। दरअसल, अब नए मॉडल के नई लाइफस्टाइल को सपोर्ट करने वाले शहरों के बसाए जाने की बात भी हो रही है। इन्हीं नए शहरों की जरूरतों को ध्यान में रखकर अर्बन एयर मोबिलिटी पर जबर्दस्त चर्चा हो रही है, क्योंकि भविष्य के शहरों में लोगों के पास इतना समय नहीं होगा कि वे ट्रैफिक में घंटों फंसे रह सकें। इसलिए ऐसी कारों की जरूरत जबर्दस्त ढंग से पैदा होने वाली है, जो हवा में उड़कर मिनटों में एक जगह से दूसरी जगह कई किलोमीटर दूर पहुंच सकती हैं।

सिर्फ सुरक्षा का ही नहीं, वास्तव में इन वाहनों की उड़ान और लैंडिंग की अनुमति भी एक बड़ी समस्या होगी, जिस पर इन दिनों

कवर स्टोरी

एन. के. अरोड़ा

उड़ने वाली कारों यानी पलाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत हैं। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी



स्काई ड्राइव, जापान की एयरटेक्स

इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी पलाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काई ड्राइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर

चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सि शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें



जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटीओल

यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारों भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उच्चल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

कई कंपनियां हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी पलाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है।

इसी तरह आरंभ एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़न वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार

डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकेब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और

जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ान भर रही हैं या दूसरे शब्दों में टैड हो रही हैं।
ऐसे आई सुरक्षियों में: पलाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक फ्लाइंग शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेन एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गईं। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के



एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटीओल, चीन

सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों को उत्सुकता है कि एयर ट्रेफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिचार्जिंग, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटेक्स

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटीओल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटेक्स मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटेक्स को टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिकल बलाने की प्लांजिंग पर भी काम किया जा रहा है। बंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लांजिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टेक्सि का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटेक्स की चलने की संभावना है।

कविता

आरती आस्था

छोड़ना

मां छोड़ देती है सब कुछ अपने बच्चे के लिए। वही बच्चा लेकर बड़ा छोड़ देता है मां को अपने प्रेम के लिए। छोड़ते हैं दोनों ही अपने-अपने प्रेम के लिए। पर लगाना अनुमान है लगभग असंभव किसका छोड़ना और किसका छूट जाना होता है ज्यादा पीड़ादायक।

खंघ / भूपेंद्र भारतीय

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

वापटाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले ली बहुत से गंत्री और जनप्रतिनिधि, वापटाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!



भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

लुकुया / अलका जैन 'आराधना'

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूँजने लगे, 'रेल

की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।' रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही

अवेयरनेस / संघा सिंह

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नाएन ए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।



खूब हो रहा साइबर फ्रॉड ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोतरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है। सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉरिंग दी जाती

देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए उरते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरिफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रीन और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।



है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अक्सर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडवर्ड साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधों का पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारियों के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं। बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं हैं, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान



हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जानने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेंडिंग ईविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शीयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडलस, मिस मैच लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान गूषण

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, हर इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी विंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदापग का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, 'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।' (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, 'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।' कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बच्चे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तक: प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह), लेखिका: सविता सिंह, मूल्य: 199 रूपए, प्रकाशक: राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली



आयोजन

वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।



दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी

प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा

प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।



धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में बृन्दा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौर, क्यारी, गमले को साफ करके गुरु, चूने से मांडने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं।

जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालीग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रंगार को सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्र अश्वमेध यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि

वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रंगार को सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्र अश्वमेध यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।



आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झंझक देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतिभागिताओं में मटकरी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजेंट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क अ-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारें और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क अ-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारें और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क अ-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारें और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

विशिष्ट पेड़ / वीना

फालसा का वैज्ञानिक नाम प्रोविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़, हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं। कई राज्यों में होती है खेती: फालसे का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़



सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है। **स्वास्थ्य के लिए लाभकारी:** फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयर्न और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइग्रेबिअल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मात्रा आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुर्ब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है। **आर्थिक रूप से लाभकारी:** फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़

बॉलीवुड / हेमंत पाल

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाम' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रही। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं। **गांवों से दूर हो रही फिल्में:** याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लीडोज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनियों का था। याद नहीं आता कि आम्बि खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो,



'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कॉर्पोरेट को टेकओवर करने की चालें होती हैं। **आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार:** आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में पेंसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल'

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सौंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव



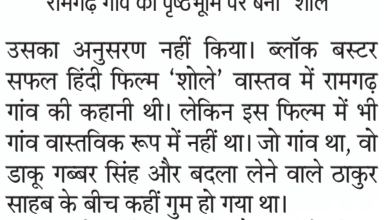
'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन



ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही। **ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर:** सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरता। बी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'बादगा' और 'बंदिनी', राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी। **धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक:** सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीजों में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में गांव की कहानियों और किसानों

के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है। **अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में:** अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मुला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी



रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू ब्राह्म सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था। **अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रिश्ते-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियां पर मल्टीस्टार फिल्में बनाने लगे हैं। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी परदे से गांव दूर होते जा रहे हैं। ***

नदी गाथा निनाद गौतम

बिहार का शोक और हर्ष कहीं जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रैणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है। इसलिए कहते हैं शोक: कोसी का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली 120 सदियों में कोसी नदी 180 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी



उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रूपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जानहानि होती है। **इसलिए कहलाती है हर्ष:** सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहे बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए। **बिहार में होता है तेज प्रवाह:** जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है। **बिहार में होता है तेज प्रवाह:** जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *